

नागसेनवी॥ गानधकका न॥ यंकड छिहूत वाहिनि दवीः वधू
 नयूयां नीः छिहूत वाहिनी ॥ ५५ ॥ कनोयक लेगीः हज हय धात्री
 छिहूत वन रात्रीः दुःख सहा नी ॥ ५६ ॥ हन रुय दन नी वाहिनी
 वन यः नमा मिश्री छिहूत वय नी ॥ ५७ ॥ वने हानि गजुः द
 वंछे सग लोः वंदि न क वाहिनीः निगिदिन रुय ॥ ५८ ॥ जत्र

400 I

वरुणी नगी ॥ ५९ ॥
 वरुणी नगी ॥ ६० ॥

[illegible][illegible]

स्वाहा॥ॐ अग्ने न जाधिय न य स्वाहा॥ॐ ने अग्ने ना क साधिय न
य स्वाहा॥ॐ वाय य यव नाधिय न य स्वाहा॥ॐ वीष्म ना य रु
नाधिय न य स्वाहा॥ वूजा मुनि ॥ ॥ॐ वू द्य स न य नि वि
व अग्ने न जाधिया रु व ष य भा य नाधिय स्येव ने अग्ने ना क
साधिय ष ना ग्माधिया व नू द्या ना जा ष वा य य यव नाधिय रु

ॐ ष कृ व ना य द्याधिय स्येव वीष्म नाधिय न भा मु न ॥ ॥
अग्ने ग न्यादि x ॥ स थ न ना ॥ ॥ ध न का द्य ध न ॥
ॐ यान प रि उ ज मा न स्य x ॥ अ स्ता क द्वा ल सं या य का मा र्थ ॥
ॐ व द्वा यानु स र्व रु प न जि न स गा य व ना रि स भ मा ॥
का क ल्या ष वि ना स क व ज न प रि ग ष य द्या र्थ ना वे पू

ॐ श्री लो क म नो ह स र्व म त्र गे अ न्य म नो ह ॥ २

आ ४ गृह्णन्तु भानि विविधं यथा ह्ययं आगार्गं ॥ सिम
न ॥ ॥ धनसिमन पारम्या चक ॥ रुनाग्निनाउन
॥ ॐ सर्वपापविघ्नि मात्रां रुसिं कुनू ४ हूं रुट स्वाहा ॥ धा ३
॥ ॐ दानपत्रं ज्ञानमात्रं ह्य ४ धा सा कुरुते हं पापकामा
र्थ ४ स्वस्ति वाच ४ ॥ ॐ अग्निस्त्वाय नक्षत्रं २ रथा हूं रुट स्वा

हा ॥ ॥ ॐ सत्यं रुक्मनवक्ष्यं ज्ञानं आ ४ ॥ ॥
धनध्यान ॥ ॐ नयं कलिनाग्नि ४ मध्यं पंकात्रं यममात्रं
व ४ नदूयवित्रं आगामि मधुलं नंकात्रा रुवं पीतवर्णं मकम
खं वरुहं जं वा मयं पुं क मधुन धनं सव्यवदा क्रमालाधनं
पीताम्यनाहनघरुषिणं यहायवी मं विनयं जयामकूटध

वं श्रीवत्सलसंस्कृतं. भोलिनं समयाग्निविहाय ॥ ॥
 उं कावत्सलसंस्कृतं. दत्तं भवत्सलसंस्कृतं. गत्तादिध्विन्य
 सवत्सलसंस्कृतं. यत्सलसंस्कृतं. ह्यत्सलसंस्कृतं. संभाषसंस्कृतं
 धत्सलसंस्कृतं. मत्सलसंस्कृतं. नयत्सलसंस्कृतं. ह्यत्सलसंस्कृतं. मित्रसंस्कृतं. ॥ इत्सल
 दत्सलसंस्कृतं. दीर्घमात्सलसंस्कृतं. ॥ आत्सलसंस्कृतं.

वापि. विविधसंस्कृतं. ॥ गत्सलसंस्कृतं. गत्सलसंस्कृतं
 मत्सलसंस्कृतं. नात्सलसंस्कृतं. ॥ गत्सलसंस्कृतं. गत्सलसंस्कृतं
 दत्सलसंस्कृतं. वीत्सलसंस्कृतं. नात्सलसंस्कृतं. वा
 धिह्यत्सलसंस्कृतं. ॥ ॥ उं वत्सलसंस्कृतं. गत्सलसंस्कृतं
 उं. सत्सलसंस्कृतं. ॥ ॥ गत्सलसंस्कृतं. गत्सलसंस्कृतं
 सत्सलसंस्कृतं. गत्सलसंस्कृतं. गत्सलसंस्कृतं.

ॐ तिनीयनजीमान

आ॥ ४८ ॥ किंवा जमूडां. गजनीनां जन ॥ धननीनां जनयाय ॥ ॥
ॐ अग्नेय आदीयादीय. विष्वा विष्वा सहा विष्वा. हव्य कव्य वाह
नाय. हव्य ३३ हव्य ४४ समय हव्य समय मिमि ॥ ॐ वज्रय क्रुहं ॥
॥ भव संवन हाय ॥ ॥ ॐ वज्रय क्रुहं ॥ वज्रा ना विष्वा न ॥
॥ पांथादि नय ॥ ॐ अग्नेय व सत्का नाय अर्घ्य यमि व

स्वाहा ॥ पांथा ॥ आग्नेय व सत्का नाय पांथा अर्घ्य यमि व स्वाहा ॥ व
कं ॥ ॐ अग्नेय व सत्का नाय पांथा अर्घ्य यमि व स्वाहा ॥ सर्व गार्ह ॥
॥ ॐ वज्रय क्रुहं ॥ ३ ॥ पंच गन्धन लपन ॥ ॐ अग्नेय व सत्का नाय
पव (ग) ॥ ॥ ॐ सर्व गन्धन लपन ॥ ॐ अग्नेय व सत्का नाय
संवन हाय ॥ ॥ ॐ वज्रय क्रुहं ॥ ॥ पंच गार्ह ॥ ॥ नि

श्रु कर्षणयायादिस्वानवाय ॥ ॥ उं अग्नेय स्वाहा ॥ उं कलिजा
य स्वाहा ॥ उं पद्मलिमाय स्वाहा ॥ उं दीपकालाय स्वाहा ॥ उं समनका
लाय स्वाहा ॥ उं मानिरुद्राय स्वाहा ॥ उं पूरुष्टाय स्वाहा ॥ उं अग्ने
य स्वाहा ॥ उं नं आ कनाय स्वाहा ॥ पूजा ला त्या मुनि ॥ वं का वं वीड नि
जातं पीतवर्धुमस्तकालं. पीताम्बुधना नंजा. अग्नेय नमो मुखक

या ॥ वदुष्टा मस्तकजा. कटा मकुटधनमी. विनया अक्रमा लांच.
धनुक मधुलधना. उक्ता कलिमाय स्वाहा. दिया काला समाष्टमा.
प्रिहंगम किमाय स्वाहा. अननाय नमो मुख ॥ मन्त्रमथेन ॥ ॥
ॐ हिसमयाग्नि ॥ ततो जा ॥ नका अग्निमिमाना ॥ उं वड सत्वः आ
द्याटय १ रुव २ रु रुट् स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ कजायोयानि संश

वनगी मनीष नय रुथा. आभना मायना यानां. वृज कर्णु मववः। व
मो देव समारुक्ता पाणिगहा गिक म्मनि॥ ॥ म मो य न ॥
वन॥ अथ २१ ॥ ॥ अजमानं कासावक॥ ॐ सर्वपाप दह न
वजाय. सर्वपाप. दह २ स्वाहा॥ ॥ अथ ॥ कृष्णाय नमः
पापं. द्वापि मंद नयं कज ठो वृषद्विधं घृणा पूजं कृष्णाय नमः

अद्वैतमहाकृष्णमालोचकवीणा-मृगधाराप्रपादनं॥ ॥
 आकर्षण-पंचवक्त्रयात्रानवाय॥ पूजासुनि॥ ॥वीहिरा
 धन॥ ध्यात॥ गंगा-मिर्मलवृंकावध-जवरुजप्रसाधं-गु
 कवजविहाय॥ जानत्यक्तयस्त्रिभुवधवकिर्मलवृंका
 मल्लयविष्णुनादुकिंदया॥ ॥ॐ नमो भगवते॥

स निधः ॥ धन ॥ ॐ नृत्नयस्वाहा ॥ दृढ ३ ॥ ॥ ॥ ॥
नम्र ॥ दृढ ३ ॥ ॥ ॐ नृत्नयस्वाहा ॥ नृत्नयस्वाहा ॥
॥ १ ॥ ॐ वज्रयस्वाहा ॥ पद्मगति ॥ २ ॥ ॐ
वज्रगति ॥ पद्मगति ॥ ३ ॥ ॐ वज्रयस्वाहा ॥
॥ ४ ॥ ॐ वज्रयस्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ५ ॥ ॐ वज्रयस्त्रायस्वाहा ॥ दूवीनसि ॥ ६ ॥ ॐ वज्र
मानेध्वनायस्वाहा ॥ भानिकधुसि ॥ ७ ॥ ॐ वज्रयात्रिष्ट
कायस्वाहा ॥ वनगमसि ॥ ८ ॥ ॐ वज्रनमायस्वाहा ॥
॥ यिनागसि ॥ ९ ॥ ॐ वज्रबीजायस्वाहा ॥ वज्रगन
सि ॥ १० ॥ ॐ वज्रवन्धायस्वाहा ॥ वनूगसि ॥ ११ ॥

ॐ सर्वपापप्रमनाय स्वाहा ॥ वेकधुति ॥ १२ ॥ ॐ वज्र
सहकानाय स्वाहा ॥ सहकधुति ॥ १३ ॥ ॐ वज्रकदम्बना
य स्वाहा ॥ कदम्बवति ॥ १४ ॥ ॐ वज्रहिल्लागिकाय स्वाहा
॥ हिल्लागिकसि ॥ १५ ॥ ॐ सर्वनागपुत्राय स्वाहा ॥
नीकधुति ॥ १६ ॥ ॐ सर्वभारहाराय स्वाहा ॥ गंकावति ॥

॥ १७ ॥ ॐ वज्रमयनाय स्वाहा ॥ मयनकधुति ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ ॐ वज्रमहादधुति ॥ २० ॥ ॐ अयमिह नवजाय
स्वाहा ॥ कुश ॥ ॥ ॐ वजाय स्वाहा ॥ दार्शनस्य ॥ ॥
॥ श्रीदिक्षु धनमस्तु ॥ ॐ सर्वबीर्हीर्जिर्बुद्ध्या ॥ १९ ॥ ॐ स्वस्वाहा ॥
॥ ॐ सर्वपापप्रमनाय स्वाहा ॥ गा ३ हा सुव ॥

॥ॐ वज्रपुष्पस्वाहा॥ आक्रम ॥ ४ ॥ॐ वज्रवर्मायस्वाहा
॥ गच्छ ॥ ५ ॥ॐ वज्रयस्त्रयायस्वाहा॥ मा० ॥ ६ ॥
ॐ वज्रवीज्यायस्वाहा॥ स्नानवा ॥ ७ ॥ॐ वज्रवीजाङ्गु-
लायस्वाहा॥ पूजा ॥ ८ ॥ॐ वज्रमहाबलायस्वाहा॥
मास ॥ ९ ॥ॐ वज्रमूर्ज्यायस्वाहा॥ मंग ॥ १० ॥ॐ

वज्रमहाकायायस्वाहा॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ॐ वज्रकुण्डला-
यस्त्रयायस्वाहा॥ कावट ॥ १२ ॥ॐ आ० हं सह मायकः
स्वाहा॥ प्रसास ॥ १३ ॥ ॥ॐ वज्रध्वजवत् ॐ आ०
हं स्वाहा॥ उमि ॥ १४ ॥ॐ वज्रकवचमाय ॐ आ० हं
स्वाहा॥ कयटुलि ॥ १५ ॥ॐ वज्रराजायस्वाहा॥ माय ॥

॥ १६ ॥ ॐ सर्वोपसिद्धिस्वाहा ॥ नयूका ॥ १७ ॥ ॐ सर्व
कृष्णाय नमः स्वाहा ॥ यका ॥ १८ ॥ ॐ सर्वसंपदस्वा
हा ॥ दधिगुठन ॥ ॥ ॐ वज्रप्रियंरुमाय स्वाहा ॥ दीपं
गु ॥ ॥ ॐ आः धर्मनरुलाय स्वाहा ॥ धनकोत्सव ॥ ॥
ॐ आः धिरुलाय स्वाहा ॥ हन. विहन. अस्व. ॥ ॐ आः मधू

वति चित्राय स्वाहा ॥ वयनस्य ॥ ॥ ॐ आः ईशं कौत्र
॥ लां मां पां शां सर्ववीहिं किं स्वाहा ॥ ह्या वृद्धिद्वय ॥ ॥
धनधृमाह विषय ॥ ॥ ॐ दानपत्रं जजमानस्य ॥ ॥ ॐ
करुणं संपाद्य कामार्थं x कलमवनेन यस्मात्पुनरिति मिश्रं
॥ स्वमिवाय x ॥ ॐ अ. गतस्मादीया दीपविषा विषमहृषि

य. हयकयवाहनाय. उजमानस्य भाति कुन् ४ पू सिं कुन् ४
 थमाहमिगृह्ण १ हूं रुट् स्वाहा ॥ पूजा लासा मुनि
 ॥ उं वूं अं सं वी ज नी जा मं. वैश्ववर्षमहा क नं। विष्णु नवं म
 सं वन्दे. सर्वसंयमिदायकं ॥ ॥ हं मिथु थमाहमि ॥
 ॥ ॥ थनवन साधन ॥ गच्छ. आक्रव. हाइ. सायाइ

इ. पंचा मृग. ॥ साधन ॥ ॥ उं वूं सां जिं खं हूं ॥ उं दिव्या न
 ध्यानयी गयेन स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ गंगा वक्रवावमनादि
 कं हत्वा. लाकोरुन ह्ना नाग्निविशय. जाला काला (ग्नोयह
 (मनहृदिकमस्रवत्या सनायनिमधुलाधिपति. वीज नि
 घनत्रिद्वीजयनि धामन. मधुलाधिपति स माधुल्यः

विद्यायाः ज्ञानसत्त्वश्च वज्रां कथं दितीया कथयवश्च व द्या
सन्नामनीनमिव समनसन्तसहकृत्वा नृलिपिंश्रुतां कथय
मायां नमनादिकं कृत्वा श्रुत्याम् ॥ ॥ आकृष्टनयायादि

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पञ्चमस्तु नमः नमः नमः नमः नमः ॥ देवयन्तः नमः नमः नमः नमः नमः ॥

॥ धनं ह्यनादृक्त्विष्य ॥ दानं चाग्रेऽङ्गमानस्य ॥ स्वर्गं
 वाच्यं ॥ ॐ अग्निं प्रादिष्यामीत्यविषाविषमहाविषादस्य कथं
 वा दनायऽङ्गमानस्य ॥ मधुना ह्यनादृक्त्विष्य ॥ गृह्ण २३ ॥ रुद्रं स्वाहा
 ॥ क्रमधियकं सूत्रा पठनं ॥ पञ्चापदानपुजासुवि ॥ ॥
 ॐ मिह्यनादृक्त्विष्य ॥ ॥ धनं ह्यनादृक्त्विष्य ॥ दानं चाग्रेऽङ्गमानस्य ॥

विद्य ॥ ॥ धनकालास्त ॥ ॥ पुनिहायकसा. दमकमे
याय ॥ मासाहूनिहनसा ॥ दिगवलि. काटवनिविद्य ॥
ॐ धनकी धनकी. धनसुनि. धनरुजनि. विधमनि. किंयनय. स
नन. सागन. धुधधनल. धाधवनि. सात्रागुयाफ. धानिस्वसा
धु. धुधसादिनि सासा ॥ ॥ ॐ धनि सात्रवनि. सात्रा

कात्रवनी. किंकनि. किंकवि. धमिधावनी. धानिधनल. सा
त्रागुयाफ. धानिस्वसा. धुधवि. धसादिनि सासा ॥ ॥
ॐ धमधमवना. धविवाहि. धिसात्राग. धनिकपिन. धननि
मानगी. धनवनि. धियुधानि. धानिस्वसा. धु. धिसायादि
धिसासा ॥ ॥ ॐ धमधमवना. धविवाहि. धिसात्राग. धनिकपिन. धननि

आनं वल्लं. हीमयचनं. खना (व). एकानि. वगैवमी. विद्यका
नि. भानि. स्वस्त्यनु. उरुनस्यादि मिस्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ वसुधै
कुटुम्बकम. वसुधैव कुटुम्बकम्. वसुधैव कुटुम्बकम्. मित्रसाध. वसुधैव कुटुम्बकम्. नि
सुखना (व). प्राप्ता. भानि. स्वस्त्यनु. दिग्विदि (व) ४ स्वाहा ॥ ५ ॥
आनं पार्थिव ॥ ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

सर्वरूपरूपं यन्मि ४ सर्वरूपं यन्मि ४ सर्वरूपं यन्मि ४ सर्वरूपं यन्मि ४
नृन २ गुरु २ वन्द्य २ खखखादि २ ॐ नृ २ ॐ गुरु ४ ॐ वन्द्य ४ स्वा
हा ॥ माल २ ॥ ॥ योलि व. पं प्रदा गिनी स्वतः ॥ स्वस्ति वायः प्रवृत्तः ॥
मं खलं त्रविश ॥ ॥ ॐ श्री वायु कार्दय मिष्ट स्वाहा ॥ ध
नयं वसुधैव कुटुम्बकम्. आपयय. आपययानं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ६ ॥

आ कोष पयायादि ॥ स्नानवाय ॥ ॥ उं जा किनीय हं ॥
ट्स्वाहा ॥ उं नामाय हं रुट्स्वाहा ॥ उं ख पुनादाय हं रुट्स्वा
हा ॥ उं त्रुपिनीय हं रुट्स्वाहा ॥ पूजा मुनि ॥ उं जा किनीय हं
था नामा. ख पुनादाव त्रुपिनी. न्य स पू वा दि सं स्था नं. स
स द्वि प वा य का ॥

अथ न सिंधु. माहनी. आ गं ग य.

न न का मं स वं टा व य

स क लं. क थं थं ग व क. ए क म ख क थु प ठ क. वा गा क य. पं
व धा वा. व व का य ॥ ॥ स ध का व ध ॥ पू र्व स ग न्ध लं
ख ॥ द क्रि ल स. दि ॥ प श्चि म न. दू दू ॥ उ रू प्र स. सा धि ॥ ॥
आ वा र्थ न. वा ड य. कु १०२ ॥ गी ग. का न धि ॥ स्व वा. न ग
वा न स्य ॥ मा न्सा दू मि मि य ॥ ऊ ऊ मा न स मा क्का क र. च

स्यात्तथाकार्थकलभायन. ॐ हृदयनापीनि. पूर्वक ॐ
 माग्राहूनि. गृह २ हृदयस्वाहा ॥ एषा लाभाभुमि ॥
 कर्मा. पंचसाल्याहूनि ॥ याज्ञज्ञाय ॥ शीत. ऊर्ध्वऊर्ध्व ॥
 पंचपात्रविन्द. श्राद्धनविन्दुविय ॥ ॥ ऊर्ध्वऊर्ध्व ॥
 पंचसाल्याहूनि. गृह २ हृदयस्वाहा ॥ ॥ ऊर्ध्वऊर्ध्व ॥

लाहूनि ॥ ॥ धनपंचसाविदिनका. कथन. वीजाय
 धनका. आयनंगय. गत्रनपुलकनका. विहृजन. मीसा
 जन. ननरु. भावना. नमनमाय. मिषाहूनिविद्य. मृद
 नृय. वज्रवक्रा ॥ ॥ ॥ कर्मान्नावल्लिपूजा ॥
 मत्तल्लिपुसायका. वाक ॥ ॥ उयकात्रणायमपुन. मन्त्र

हं नील वंशं मधुपविप्रं कावचमग्निमशुलं. त्रिकोणं क
वधु। कथापनिद्रुकावयय. संज्ञा मंदसिखायनि. काकावय
मं. वृहदु. सांकाशनं विविक्तः मयूरकादिपदिपुत्रिमं।
वंद्रुं गोशिरं नोमां पां नोऽं कावचं नवधीष्टिमं. पंचाशतं
वयं यो यं नूयं निष्ठाय. वाता. कायलिताग्निः नायविदि

नंद्रुं कावचं गुं विलिया मृग रुं. पात्रा नृवधुं दवा
नीयं सफकीन स मूय ववा मृगं जा कषयं रु ॥
आकषं षयायादिमय ॥ स्वा नवोय ॥ उं स्व वृहदुं ल
वायन मः स्वाहा ॥ उं अग्निमा ऊरुं ववायन मः स्वा
हा ॥ उं वृहदुं लवायन मः स्वाहा ॥ उं वृहदुं ववाय

नमः स्वाहा ॥ ॐ काटन वाय नमः स्वाहा ॥ ॐ उमकने
ल वाय नमः स्वाहा ॥ ॐ कया नरे ल वाय नमः स्वाहा ॥ ॐ
लीष दरे ल वाय नमः स्वाहा ॥ ॐ संहा लरे न वाय नमः
स्वाहा ॥ ॐ उग वन्याय नमः स्वाहा ॥ ॐ वक्र यल्ये नमः स्वा
हा ॥ ॐ नूदाय ल्ये नमः स्वाहा ॥ ॐ कोमात्रीय नमः स्वाहा ॥ ॐ

वेष्ठीयीय नमः स्वाहा ॥ ॐ वावाश्रे नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ न्या
यल्ये नमः स्वाहा ॥ ॐ वा मल्लय नमः स्वाहा ॥ ॐ महातन्त्री
य नमः स्वाहा ॥ ॐ गंगाय य नमः स्वाहा ॥ ॐ पद कनाथ
य नमः स्वाहा ॥ ॐ महाकालाय नमः स्वाहा ॥ पूजाता स्वाह
ति ॥ ॐ मणिमाङ्गनं त्र्येव वल्लुर्थकारे लव ॥ ॐ उम

नरुल वंष्ट्रव. कयात्री री घण स्रुधा। सं हा वंष्ट्रव
रुल वा सं न मा सु न ॥ वृक्षा य पी म हा दे वा. नृदा य पी व
व व। कामात्री व न था दे वी. वे घू वी व न मा सु न ॥ वा वा दा
व म हा दे वी. वृन्दा य पी गो त्र म नि हां. निर्मा स का वि
का दे वी. महा ल की न मा सु न ॥ स व द्यु य ॥ ० ॥

॥ सु वा दू गा था ॥ ॐ न म ४ श्री व ज स त्वा य ॥ द वा ४ स त्वा स व
जु जं ग सि द्धाः ना क्रा स पू र्णः क ट प ट ना व. ग न्ध व य क्रा ४ ग
रु जा न य व. यं क वि रु मो नि व स कि दि वा ॥ १ ॥ गे रु
क जा न ४ पृ थि वी स व रं. रु मा ऊ लि वि रु य या सि ना न्।
स पू य दा व स रु रु न सं धे. गृ त्वा ॐ हा या म न ग म

॥ १ ॥ अथ मन्त्र एषु निवसन्ति दवा यन न्यनद सुखं
वायवा दया कृत्रि विमलु लव. नगत्र प्रसूतं वषट् वयं वसं
ति ॥ ३ ॥ मन्त्री नत्सु सर्वेषु वसंग मेष. वत्तान यथा
पिकुमा विवासा। वायी नजत्र प्रवृत्त लव. कूप्येषु दीपेषु
महानदीषु ॥ ४ ॥ अथ गामा मया मेषु वत्तान न व. गुण्या

विष्णुः ३
नययत्र गृह्येषु यत्र ॥ विहात्र वेण्या वसन्त मेष. म। थ
पसात्रा सुवर्कं जनानां ॥ १ ॥ अथ रुतयि मेषु वत्तान न व.
सन्ति. यमा मन्त्रेण प्रवृत्त लव. यत्रैक वृक्षेषु महाय
थेषु. महासमभानेषु महावनेषु ॥ ६ ॥ सिंहेषु म
क्षाधुषिमाप्ययत्र. वसन्ति यानां महाटवीषु। दीपेषु

दिप्य षरुगात्रयव मन्त्रस्मभानध्वस्तनियव ॥
हस्त्यसन्नासवगन्धमात्मा धूपं वलिदीपविधिं वरुका ग
हं दुःकुं नु पि वहु व दं ॐ दं व क मां सरु लं रु गनु ॥ ८ ॥
ॐ द्या उ व कि सरु द व सं धै ॐ दं व लि गृ द्ध विधिं व रु क्ता
मृग्नो धने अरु सरु य मि श्व आ यं य कि वा य ध ना धि य श्व

॥ ९ ॥ ॐ भानरुगाधिपमिश्र देवा सु उ द्ध व न्दा क ६
पि ना सरु श्व । द वा स भ ना रु धि य व ना ग ॥ ध ना ध ना गु श्व
ग लि स भ ना ॥ १० ॥ प मि प मि त्व क नि व द य ति स
क स्य का वा उ दि भ व रु ना गृ द्ध नु रु द्ध स व ना भ मि ना
भ नि व प मि व क ना मि नि ष्ठा ॥ ११ ॥ प षं

पठान्वरुणाया नाधिपत्ये नमो नमो ॥ १२ ॥
यनुमिप्रनुवेदं. ॥ १३ ॥ दं व क नं स क लं रु गं रु ॥ १४ ॥
हनु हनु न वा-पद्य न क न्य न गुरु ॥ १५ ॥
न्या गान वि (१) ष म ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

गवात्र ॥ ॥ॐ वज्रस्य मन्त्राय स्वाहा ॥ दुःखं किं ॥ ६ ॥
॥ ॥ॐ वज्रप्रियं नमोऽय स्वाहा ॥ श्रीगणेशाय ॥ ॥
॥ॐ सर्वपापघ्नं नमोऽय स्वाहा ॥ कृष्णाय ॥ ॥ॐ सर्वत्र
लाभाय स्वाहा ॥ भगवते ॥ ॥ॐ वज्रवीर्याय स्वाहा
॥ सुखाय ॥ ॥ॐ सर्वकर्मक्षयीय स्वाहा ॥ नृपकेशवे ॥

॥ ॥ॐ वज्रमद स्वाहा ॥ यत्र कर्म ॥ ॥ॐ यत्र
कुरु स्वाहा ॥ भिक्षाय ॥ ॥ॐ कुरु सर्वकार्ये निः
॥ॐ मदेदाय स्वाहा ॥ कुरु ॥ ॥ॐ मदे सर्वदद्यात्
नमोऽय स्वाहा ॥ कर्म ॥ ॥ॐ वसिष्ठवन्द्य स्वाहा ॥ नमोऽय स्वाहा ॥
॥ ॥ॐ कुरु सर्वकुरु स्वाहा ॥ श्रीगणेशाय ॥ ॥ॐ दिन

पदस्वाहा॥ हामवका॥

॥ॐ वत्तपदस्वाहा॥ नस्वाकच

का॥

॥ॐ समयतवका॥ वयस्वाहा॥ मृचुवसि॥ ० ॥

ॐ सर्वसंयायसाधयका॥ पृष्टिं कृत्वा॥ स्वाहा॥ गुरु॥ ० ॥

ॐ कनिष्ठानि सर्वसिं कृत्वा॥ स्वाहा॥ अरुहाम॥ ॐ आ॥ ॐ ह्रं स्वा
हा॥ विरुहा॥ ॥ॐ आ॥ ॐ धर्मनरुहाय स्वाहा॥

वसा॥

॥ॐ वज्रनस्य स्वाहा॥ वयवस॥

॥ॐ वका॥ व

वस्वाहा॥ इयोक्त्वा॥

॥ॐ सर्वपृष्टरुत्त॥ ॐ आ॥ ॐ ह्रं रुट् स्वा

हा॥ समस्तपृष्ट॥

॥ॐ विक्वा॥ प्रकृत्वा॥ दायनासने स्वा

हा॥ विक्त्वा॥

॥ॐ विमधनस्वाहा॥ कसि॥ साव॥ वाक्॥

॥

॥ॐ विनवनस्य॥ स्वाहा॥ स्वमात्रि॥

॥ॐ वज्र

सर्वजिनस्वाहा॥ नमस्तवा॥ • ॥ॐॐमिरुलस्वाहा॥ जिह्वा
त्र॥ ॥ॐॐसुगन्धस्त्रिपुः स्वाहा॥ यवा नमो सुमान॥
॥ ॥ॐॐनादिपुङ्गस्वाहा॥ कस्तु॥ ॥ॐॐसर्वनाग
प्रसन्ननायस्वाहा॥ ॐम्. जि. गन्ध. हाकुजि॥ ॥ॐॐ
नमो जिह्वानेहा नमः॥ ॥ॐॐनमस्तवा॥

निविध्य॥ ॥ॐॐधृगवाह्वः विनूरय. विनूपाक. कृवः
लानां सुशिरुका सार्धस्त्रिस्वाहा॥ ॥ॐॐदमवत्याः
॥ॐॐसर्वलोकाणां कल्याणका सार्धस्त्रिस्वाहा॥ ॥ॐॐ
यात॥ ॥ॐॐललिटापूत्रिमदानगनाधिपतिष्ठाया स
नमस्तवा रुद्रवस्य नमस्तवा पुण्ययमाय नमस्तवा सिद्धिकामार्थस्व

सिखाहा॥

॥ महाबाजायाम् ॥

॥ न शरु कृप्या ॥

विधंदिपोपंकाथनवात्रोमनसात्रवापि. यद्वादनियंमहसा
नकत्वा. तथा नदसिग्रह (मनकं वां. ॐ दं यणीमं वनवत्तकं वां
नकनसकन ॐ दामुस्वस्तिस्वाहा ॥ ॥ वज्राचार्य ॥ ॥
ॐ वज्राचार्य महापाहू मूकनामनविष्णुकथाप्रवक्तिसदा

शौख्यं अघि सिद्धि रूत संपद कामार्थ स्वस्ति स्वाहा ॥

॥ ॐ वज्रावायं नमो भगवते सखि क्रमसिद्धिकामार्थस्वति
त्याहा ॥ ॥ उपाध्याय ॥ ॥ ॐ दानपत्रिका ज्ञानमानस्य श्रम

कनाभिनयप्रयोगादिसुगंधपत्रियानामंभलाकरुलसंघा
पकामार्थस्वस्तिस्वाहा॥ ॥ अजानान ॥ ॥ उं हगन

नमोस्तुभ्य नमोस्तुभ्य नमोस्तुभ्य नमोस्तुभ्य
कसन्वनवउवा नादी सजानदवदवी उरसिदिहाना ॥

॥ धनमूलपुत्राय ॥ ॥ उवाचयोर ॥
॥ धनमूलपुत्राय ॥ ॥ धनमूलपुत्राय ॥
॥ धनमूलपुत्राय ॥ ॥ धनमूलपुत्राय ॥

॥ धनमूलपुत्राय ॥ ॥ धनमूलपुत्राय ॥
॥ धनमूलपुत्राय ॥ ॥ धनमूलपुत्राय ॥

॥ धनमूलपुत्राय ॥ ॥ धनमूलपुत्राय ॥
॥ धनमूलपुत्राय ॥ ॥ धनमूलपुत्राय ॥

वसन्तु लो ज्ये नाउरु उरु नाउरु नाउरु
सगादिजिनरु हारु हारु वापि पनायकिव मा गऊ मरु नाविषु
वायु मरु वला. कामदव रुनि श्वेव. वरु हारु रुतु हारु विवो
पा मरु वा श्वेव. कुरु वरु कुरु य मा धर्म नागा व नागा धर्म. गभवा
सुनकिन्न ना. उरु यं विं भरु अ देवा. अरु निरु निजाभिनि. महा
नागा रिगायव. निर्मानव रुवहिने. निर्मानव रुदेवाधः

हः
जावा (म) पगा श्वय. मानीवीला कधरु. महा वरु निवासिन. व
रु दी पलिगा सला. रिगायव विधायय. हाउ नं सर्वला का श्व.
लगा गु लमि नायलं. मदिगा रु मि रिगायव. विमलायां व
वणा लगा. अविष्म कि निवा साव. सावला या रुपा यदा. धर्म
भयाने गा यव. इरु नायां गगा यव. इरु गगा या यपाफा. ५

साकार्यानिवासिनी. दधरुमन्ध्रं नाथ. आर्यांशं महापूज
 ला. संवद्धावकाशेव. त्वं विधानवृषिनी. प्रगननवृक्षिणी निः
 लम्बिनि. दवास्तनमनूषका. पीतिमाहामविधानन. वृंध्यय
 गधमधुसं॥ स्वस्ति॥ ॥ उं यूर्ध्वं वाहूनि गुरुं वृत्ता ॥ :
 ॥ ॥ धनकलससुवहाय ॥ ॥ ॥ वृंमिमान

मिषिवानसमाया॥ ॐ ॥ सख्युत्तरेयकृष्ण १३
सिद्धयकार्दि॥ लिपितं व्यावाहान न लनामन्त्रावयावजावाय
गोभीजननसिने. वेशवजावाय श्रीगोननसिन्यामवासं
विद्याज्ञाना॥ सुते ॥

पंचसात्रि पूजा विधिमाह॥ श्रीगुरुं हनीत॥ जापपूष
नित्यं जन॥ ध्यानः नृपुण्यं विराज्यः नृपुण्यं कृतनाग
रूपिदत्तकमलायानिवन्तु कर्णौ शुभं कर्णनागवन्मध्य
विराज्य॥ शकर्वी पाद्यादिस्नानं य॥ ॐ आरुणी देवी
नमः स्वाहा॥ ॐ पुनर्गिरी देवी नमः स्वाहा॥ ॐ उडु पुन

देवी नमः स्वाहा॥ ॐ हं मानवा देवी नमः स्वाहा॥ ॐ मासकी दे
वी नमः स्वाहा॥ पूजा नृपुण्यं विराज्य॥ नृपुण्यं कृतनागः
शुभाय संय संगिनीः एवमाहं स्वामिं वारुण्यं एव
मासकी॥ मंगु पापगय॥ ॐ श्री हंः हा जी अखं स्वाहा
वीज नय॥ अमृकं २ अमृक नृपुण्यं सयं हं॥ त्रिको नृपुण्यः

आयन मखा हा ॥ उं कुं का ह्या यन मखा हा ॥ यू जा ता ह्या लुगि ॥ नीला
त्रेह निला कानं नि विं क त्ये स्व नृ पिनी ने ला सा वन शानि ये नृ त्य
माने म मलु ग ॥ म लु पा ग गय ॥ उं आ हं ह सार्दी ज र्वं ह्या नाः
बीज गय ॥ उं अ म नं २ अ म नं पु वं ग य हं ॥ शि का ल वी य ॥
उं आ हं ह्या हा ॥ व जन धि य ॥ उं हं हं हं हं हं ह्या हा ॥ सः ॥ म र गाः

॥ ३ ॥
य ध मा न्या दि ॥ गी गयी गवी ॥ जा य धू वनी ली जन ॥ धमन ॥ गगा
त्यन्ना स नो द वी क न्या स्व काम नृ पिनी उ दि गा क स मा व र्हाः सा र्वा
द क स म पु र गं स र्व त त्र वि दि गं गी य प्र व र्हा स मा द र्गं अ र्वा द र्गं
रजा द व्याः सा का ना ए व स नि रं ना ना त्र स ध मा द वी उं ता क र र
अ म म हा न ॥ अ क र्वा य या दि ॥ ह्या न वा य ॥ यी ग व र्हा द वी र हा न

卷之四

[illegible]

रवि प्रहाराद्वनः
माहात्म्यवि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कर्मण्यपेक्षादि ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वीर्यवान्कायवान्पुंउगीर्यवान् ॥ स्नानदीयां ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
स्नानदीयां ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ स्नानदीयां ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
स्नानदीयां ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ स्नानदीयां ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
महावानी जगत्सर्वं महतां हिउनी जगत्मायावयापिगं सर्वना

नेवंदितं सुखं ॥ मनु पातय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वी
जगत्मा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
मः ॥ मः यधर्मा ॥ ४ ॥ जीत ह त्रिवर्त ॥ जायध्वनि नो ज ॥ धनम
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
चत्सर्वमाः समयत्र गंतुं हंरुकी वंरुता वनी रहः एवा कर्हि

वहकावगस्यगर्हममंहरवन्॥शकषपाद्यादि॥उंहरिगव
र्हवाग्नीदवीएद्यानकायपादार्धपुनीरुसाहा।स्नानवापा॥उं
हरिगवर्हवाग्नीदवीनमसाहाउंहरिउादवीनमसाहाउंयूनव
गीदवीनमसाहाउंश्रीमद्वरिहृदवीनमसाहा।पूजात्रयास्तुतिः
हरिवर्हमहादवीस्वर्गद्वन्द्वनगीकपानकनिसेहसाहिहिदा

[illegible]

पंचरात्रियुगाविधि॥ धनपंचपाण्यार॥ गीतरामरुद्रहृत्॥ पु
त्राननपाठ॥ ॐ शंकरकचलुनपाठ॥ स्वस्वस्तं त्रिश्वरकृष्णसंस्थ
कान्तवकात्रादिपत्रिद्वयं॥ धनवीजधृक्ः ॐ गायत्रिनिःशब्द
धृत्वा ॐ प्राणश्च नय॥ जापधूपनिर्वाजन॥ ध्यान॥ श्रुत्वा न
कपातं मोक्षाननमन्त्री श्रद्धादग्राह्या स्वर्गवानां कृत्वा स्वर्गक

पानकृत्वा त्रिध्वजकथमगतकथमर्चयन् नवमं च नृपदादिति
नृरुद्रकाधनपात्रं च स्वस्वोक्तकमस्तु नृगैर्नृगैर्नृवीनारगनय
वारुणकनेन वशीवनसंपन्नातिनृगगुणगुडनी उवं समयस्त
विलोकाः रुद्रिहिकयं कानेन हस्मि संस्थाप्य श्रुत्वा त्रिध्वकृष्ण
नृपुत्रवत्॥ हृत्वा श्रुत्वा सत्त्वं वनगावन्तं विनायक॥ हृत्वा जीह

ॐ श्री गणेशाय नमः

का नन हन गव न हा का ना गंध ना गनं जो का ना वा ज न ना व अ ह ना
ना न उ ह व य ह उं न्ना हः अ धि हाना म न ह म उ न्ना न वी या ॥ ॐ श
प्रः म गिनं क र्हि का च य ॥ ॐ न मा ह ग ह गान् वी अ मृ गं ३ म र ह
व स व व स्यं क र्ता अ मृ गं ३ म र ह ॥ श क र्ष न य धा दि ॥ ॐ व ड क न
ठ क र ह द्वा न का य धा यं पु गी च म ॥ ॥ खान वा या ॐ व ड वें ना च नी

ॐ श्री गणेशाय नमः

का नन हन गव न हा का ना गंध ना गनं जो का ना वा ज न ना व अ ह ना

य ह द्वा ह ना ह म य क नो न ना य ह द्वा ह ना ॥ वि स म य न
व का य ह द्वा ह ना ॥ ह म य वि स य क नो व का य ह द्वा ह ना ॥
जा ना मु ति ॥ ॐ ना थ ग स्य ह का न न ना ॥ ॐ क र्ता योः यो मि
नी ग न म ध्य क स ह ज न न उ न्ना चि नी ॥ ॐ अ म य ध म ॥ ॐ न व
त्रि वि य ॥ ॐ का ना म र द्या दि ॥ ॐ मिय उ प र ना वि धे ॥ ॐ न म
ॐ न पू ज ॥ ॐ गिन ॥ ॐ न म यी वं क वा ना ही स म वा द न उ मा
न ग र हि का ॐ व द धि ॥ ॐ का र न भू ॐ ॐ कृ प न तु व ज ध न ठ

ॐ श्री गणेशाय नमः

सुखं भवति ननु तदा ननु
सुखं भवति ननु तदा ननु

वृद्धाऽपि गच्छादिकं संसृज्याः ॥ ३ ॥ कानं सतासीनं सह जाननु
चिनी पलाशनादि गार्जं वनमस्तवज्जया मिनीः नवागीवज्ज
वानाही मनु मेहि जिने मंत्री श्रमने वनवाही सात च विदु निवा
मिनी ॥ ४ ॥ यत्रिका यः ध्यान ॥ ५ ॥ नमशी वज्जनाही ॥ ६ ॥ क
नमूदि गो यः स्वराव गच्छा सर्वधर्म स्वराव यः ॥ ७ ॥ गगु
जा सर्वधर्म जागु गीह ॥ ८ ॥ उथ मगनं सस्मानं पर्वता दो उ चैरा

पुस्तकं भवति ननु तदा ननु
पुस्तकं भवति ननु तदा ननु

नमूनी पविउ मकटके ॥ १ ॥ यद्वि मातिः मर्यादानी वंचन
गवाहि काम्ख ॥ २ ॥ हि फं गीह न कवर्ज वृक्ष द्वासा हवजः ॥ ३ ॥
न यादु मवज्जयानया त्रिष्या वज्जः स पार्जमा सुयवर्ज सवायि
नन वृ दवणा वि गृहिः ॥ ४ ॥ नाहिलेय कानं गवि गवदन पश
नइप त्रिहृदयसा मर्याद मिमध्य साव कानं गहक कियनिनाम
न श्रीमानं वज्जया मिनी राव यः ॥ ५ ॥ मिम्व्या हि गृहायैव क। ॥
पुस्तकं भवति ननु तदा ननु

कं वा न धन नी मू क कं भा व न य म व त्ति न ज न व ज्ञो व न न ग व ल म
पं च नू डा ये र वि त्त म मं ग ल म रु नो यं व मू डा म हा मू क दं शू ड य यं
क ठा उ वीः श वा मि रु न म दृ ग्यं को लो स्या न किं ली तु न न को
ध स्या वा म न य म पि ठ क कृ य स मं चि तं सं हृ ति य न मा र्थ न म हा
ह र्ये क नू त्त म ति कां लो म क म हा नी न वी शी लानं स च ना व न
जा य थः त्रि नां शं म न क ता न वाः श क य न का यो दि स्था न वा य ॥
उं छि यं छि यं क नी ये स्वा हा ॥ शु क्ता ॥

उं जी ह ह हं हू हू हू हा उं व वे ना वं ल्ये हं हू हू हू हा ॥ म य ॥ वं व
जं वा ना ही यं स्वा हा उं हां य या मि नी स्वा हा उं जी म हि नी स्वा हा
उं हं जी स चान नी स्वा हा उं हं हां ग ग नी स्वा हा उं क ट व व पु का य
स्वा हा उं हं व ज स्वा य स्वा हा उं न म जी वं ना व ना ये स्वा हा उं य म
न र य म ना य स्वा हा उं तो द ट न हा सं ह वा य स्वा हा उं हं हं हा व र्ज स
या य स्वा हा उं हू हू य न म ग व न व जी य स्वा हा ॥ य न व न म ग व न

मः वडसं न वकः ह्या उ जं का ह्यो का य चो मधिः स म धाः म ॥ थन गत्य
न ॥ उं सं ह म् निसु म् र्दु द उं अ ज्ञा तं दू द उं ॥ वी ह क र उं उ उं
रु र उं अ य र्दु द उं ० वृ र्दु द नु र्दु द उं उं उं र्दु द ॥ थ
न व नि वि य ॥ उं जी व ज वा ना हो ॥ मां व ती गृ क् २ र्दु द स र्व वि पु
वि ना य कां र्दु न र्दु द का नू य म् र्दु द सि धिं क् २ स म् य क् ० मि प र्दु द हि
मां ॥ थन क ह नि धि र्दु द पू न दी य ॥ थन मा म कि कि हि क न स पू जः

जा य धू यः मं ग य ॥ य ॥ उं र्दु द अ र्दु द ॥ थन ॥ पू न यि त्वा गु र्दु द
रा व य र्दु द ॥ जी क् ० न र्दु द र्दु द नं मा का न र्दु द मा म की न का हि उं अ र्दु द
प ० ॥ हि उं र्दु द स र्दु द का न र्दु द ॥ र्दु द र्दु द न यो स र्दु द यो ल न र्दु द
ह न र्दु द न उं वी र्दु द य र्दु द ॥ अ क र्दु द न ॥ उं मा म की र्दु द वी र्दु द र्दु द उं
न ग ति र्दु द वी र्दु द र्दु द र्दु द वी र्दु द र्दु द र्दु द र्दु द र्दु द र्दु द र्दु द र्दु द
पू ज न र्दु द र्दु द ॥ न क र्दु द नू क र्दु द का स ना हि म र्दु द य र्दु द मि ना र्दु द

नृपुञ्जाः क्षीरानाः पञ्चगव्यः विमलजनः किंकलस्यो कायः
द्वयानकायः द्वितंकायः सगनंगायः कनरा हि स्थक
मंदायः सिन्धुनमगुनं कायः बुडा नृत्यः मगुलनं यनरा
यः यजत्रिज्ञायः सिद्धयः सगनं माहनी द्विवकः यत्र
सुतः नीनसः नक सुतः सिद्धमंतः देवयागयः पुनका
याः स्वाय कायः उग्रहीयकः सिद्धायः सनयावकः गहा

तः महाकायवनी कायः कनरा नडाहायः कसकः सिन्धु
नडाहायः विमलकायः पृजा विमलमा कठः सं २४२
मंजिअनगुके ७ वायाः बुवा सवाजागनं को के आगम सपुजा
यायवदयकाः घटी १ वायः सिद्धयकाः अमनवांमना २७७ इडा ॥

(सिं) (वुं) (मा) (रे) (को) (वे) (महा) (वा) (ॐ) (वा) (कू) (ग) (या)